भजन

तर्ज–रहा गर्दिशों में हरदम

दुख के जहां में रहना,रूह को नहीं गंवारा
यहां बेबसी का आलम,कोई बस नहीं हमारा

1–कैसा अजब ये सपना,यहां कोई नहीं हैअपना
नजरें तरस गई हैं नजरों को दो नजारा

2– तुझको रिझाऊं कैसे करूं अर्ज भी तो कैसे
माया ने सब वो लूटा जो था असल हमारा

3–जिस दिल को मेरे दिलबर तुमने अर्श कियाहै
हाय क्या करूं वो दिल भी न हो सका तुम्हारा

4– नजरें करम से तुमने अपना बना लिया है
कुर्बान हो सकी ना न अपना आप वारा